अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. श्रद्धा हिरकने
सह–प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

भूमिका

आधुनिक हिंदी साहित्य की विभिन्न प्रसिद्ध लेखिकाओं में एक उभरता नाम है अलका सरावगी। साहित्य जगत में अलका सरावगी का विशेष स्थान एवं योगदान स्पष्ट दिखाई देता है। अलका सरावगी ने न केवल नारी विमर्श बल्कि जनसंपर्क विमर्श, वृद्ध विमर्श, विज्ञापन जगत तथा अन्य सामाजिक विसंगतियों को विषय बनाकर साहित्य में अपने विचार रखे हैं। अलका सरावगी के उपन्यासों को पढ़ने पर यह स्पष्ट होता है कि उनमें अपने विचारों को साहित्य के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की विशेष कला है।

अलका सरावगी का जीवन परिचय

अलका सरावगी का जन्म एक व्यवसायी मारवाड़ी परिवार में 17 नवंबर 1960 कलकत्ता में हुआ। ''कलकत्ते में पैदाइश और परवरिश के कारण मैंने कलकत्ते को ही अपना देश माना था।'' साहित्यकार अलका सरावगी के पिता का नाम केशव प्रसाद केजरीवाला और माता का नाम शकुंतला देवी है। आपके पिता एक सफल आर कुशल व्यवसाई होने के साथ–साथ परोपकारी और गांभीर्य मंडित प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपकी माताजी कुशल, सामान्य और धार्मिक प्रवृत्ति की गृहणी थी। आप अपनी मां को ताई कहती हैं। आपके पिताजी आपकी तथा आपकी बहनों की शिक्षा और पालन–पोषण के लिए सजग तथा जागरूक व्यक्ति थे। आपके पिताजी में सफल व्यवसायिक निपुणता थी ही परंतु उन्हें शेरो शायरी पढ़ने में भी दिलचस्पी थी। पत्र लेखन के कौशल में बड़े ही निपुण थे।

अलका सरावगी की शिक्षा

अलका सरावगी की विधिवत शिक्षा 12वीं कक्षा तक हुई उसके उपरांत आपके पिता ने कॉलेज में दाखिला करवाया ताकि शादी के लिए अच्छा वर मिल सके। अलका सरावगी जी स्वयं कहती है कि ''मेरे व्यवहारिक पिता का ही शुक्र है कि कॉलेज की आइरिश प्रिंसिपल मैम के मुंह से यह चुभता हुआ वाक्य सुनने के लिए मैं कॉलेज तक पहुंच ही गई ''तुम लोग यहां पढ़ने थोड़ी ही आई हो, शादी की प्रतीक्षा करते हुए शादी के बाजार में अपनी कीमत बढ़ाने आई हो।''

अलका जी अपनी शिक्षा और विवाह से संबंधित तथ्य को स्वीकार करते हुए कहती हैं कि ''यह मानदंड मेरी मां की शादी के वक्त यदि छठी, सातवीं कक्षा तक शिक्षित होना था तो हम बहनों के लिए इसकी छूट बढ़कर उच्चतर माध्यमिक या कॉलेज दाखिला होना हो गया था। यदि मां के लिए सिलाई–कढ़ाई, खाना बनाना वगैरह जरूरी योग्यताएं थी तो हमारे बायोडाटा (परिचय पत्र) में तैराकी, गाड़ी चलाना, चित्रकारी, संगीत वगैरह–वगैरह योग्यताएं भी शामिल कर लो गई थी। पर सारी शिक्षा का उद्देश्य वही का वही था। प्रचलित पैमाने के आधार पर सुयोग्य पत्नी, बहू और मां बनना। यहां तक कि योग्यताओं के इजाफे में पूरी सावधानी बरती जाती थी कि वह इतनी अधिक न हो जाए कि अनुकूल वर ढूंढने में मुश्किल हो।''

सन 1988 में दोना बच्चों के जन्म के उपरांत आपने आगे की पढ़ाई के लिए सशक्त विचार बनाया। साहित्य स्नेह और संवेदनशीलता के कारण आपने हिंदी साहित्य में एम. ए. किया तथा रघुवीर सहाय का काव्य विषय पर पीएचडी का शोध कार्य किया। पत्रकारिता में विशेष रुझान होने के कारण पत्रकारिता में डिप्लोमा भी किया। बी ए में हिंदी विषय ना होने के कारण एम. ए. करने में अड़चनों का सामना करना पड़ा अनेक मुश्किलों और जिम्मेदारियों को अदा करते हुए भी आपने एम ए प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। मंजू रानी सिंह कहती हैं ''आगे पढ़ने की उसमें सच्ची चाहत जगी थी पर पर स्थिति प्रतिकूल थी। वह नियमित विश्वविद्यालय में जा कर पढ़ाई करें परिवार में ऐसी छूट नहीं थी।'' अलका सरावगी कुल तीन बहने हैं। आप अपनी दोनों बहनों से छोटी है। आपकी दोनों बहने अधिक पढ़ न सकी।

अलका सरावगी का विवाह

अलका सरावगी का विवाह मात्र 20 वर्ष की आयु में सन 1980 में मारवाड़ी व्यवसाई परिवार के बड़े बेटे महेश सरावगी के साथ हुआ। शादी के उपरांत आपने अपने कर्तव्यों से जी नहीं चुराया। पत्नी, बहू, जेठानी आदि सभी रिश्तों को बड़ी सूझबूझ, समन्वय, विश्वास के साथ निभा रही है। अलका जी एक संयुक्त परिवार की कुलवधु बनी। आपको अपने परिवार के सभी सदस्यों के प्रति आदर, स्नेह, दृढ़ विश्वास है। आपके घर में आपकी सास सीता देवी, ससुर, दो देवर तथा दो देवरानियाँ विभा और ज्योति है। विभा और ज्योति अलका जी की देवरानी नहीं अपितु सहेली और पाठिकाएं भी हैं। आपकी सास ने आपकी पढ़ाई के प्रति पूरा योगदान दिया। परिवार के सभी सदस्यों की भांति महेश सरावगी जी भी सरल, प्रेमपूर्ण, शालीन और

सभ्य व्यक्ति हैं। अलका जी के पति ने अलका जी के रुझान और आगे बढ़ने की ललक को पूरा सहयोग दिया। संवेदनशील व्यक्तित्व वाली अलका जी ने अपने दायित्वों को बड़े ही प्यार और अपनेपन से अदा किया।

अलका और महेश सरावगी की संताने हैं बेटा मयंक और एक बेटी सलोनी। अलका जी का बड़ा बेटा शारीरिक अक्षम है। वर्षों से चल रहे लंबे इलाज और हर तरह से उसे सामान्य बनाने का उनका संघर्ष निरंतर जारी है। मयंक और सलोनी में आपके आत्मानुशासन और संस्कारों की छवि स्पष्ट दिखाई देती है। वे दोनों आपकी रचनाओं के विशेष पाठक भी हैं। अलका सरावगी को साहित्य रुझान के साथ–साथ पत्रकारिता में भी खास दिलचस्पी थी। इसलिए अलका जी ने पत्रकारिता मे डिप्लोमा भी किया। बाल्यावस्था से ही आपकी शिक्षा के प्रति रुचि रही।

अलका सरावगी का साहित्य लेखन की प्रेरणा

अलका सरावगी एक मारवाड़ी परिवार से हैं। मायका और ससुराल दोनों ही पक्ष व्यवसाई है। व्यवसाई नेपथ्य होने के बावजूद अलका जी का साहित्य के प्रति विशेष अनुराग था। पिता व्यवसाई जरूर थे परंतु उनको शेरो – शायरी और भाषा से अनुराग था। अलका जी को शुद्ध भाषा के संस्कार और भाषा पर पकड़ पिता से पैतृक रूप में मिली है। अलका जी के लेखन की प्रेरणा के विषय में कृपाशंकर चौबे जी लिखते हैं – ''बाल कोष में उन्हें संयोग से काम मिला था उसी समय एम. ए. करने का भी विचार आया। अशोक सेकसरिया से परिचय हुआ जिन्होंने लेखन की ओर प्रेरित किया।''

अलका जी के अथक प्रयास के उपरांत भी मयंक का शरीर सामान्य हो पाने में विफल ही रहा। मां की ममता और बेटे की इस वेदना के कारण अलका जी में साहित्य की रचनात्मकता का कौशल उत्पन्न हुआ। पारिवारिक परिवेश और कार्यालयीन परिवेश के प्रोत्साहन के चलते अलका जी को साहित्य रचना की प्रेरणा मिली।

अलका सरावगी की रचनाएं

प्रत्येक साहित्यकार की रचनात्मक परिस्थिति, पृष्ठभूमि भिन्न होती है। वह अपने आसपास के वातावरण और संवेदनाओं से प्रेरित होकर अपनी कलम को सशक्त कौशल के साथ क्रियाशील करता है। अपनी रचना को गति, रंग–रूप, आकार, प्रकार आदि प्रदान करता है। इसी रचना से साहित्यकार की प्रतिभा की परख होती है। साहित्यकार के जीवन के कुछ ना कुछ अंश उसके साहित्य में अवश्य मिलते हैं। अलका जी द्वारा रचित सभी कृतियां चर्चित और बेजोड़ हैं।

उपन्यास

1 – कलिकथा वाया बाईपास

2 – शेष कादंबरी

3 – कोई बात नहीं

4 – एक ब्रेक के बाद

5 – जानकीदास तेजपाल मैनशन

अलका सरावगी के कथा साहित्य का इटालियन, मराठी, उर्दू, गुजराती, जर्मन, स्पैनिश, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

कहानी संग्रह

1 – कहानी की तलाश में

2 – दूसरी कहानी

अलका सरावगी की उपलब्धियां

1 – सन 1998 में कलिकथा वाया बाईपास उपन्यास के लिए श्रीकांत वर्मा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

2 – सन 2001 में कलिकथा वाया बाईपास उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

3 – सन 2001 में शेष कादंबरी उपन्यास के लिए बिहारी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

इस प्रकार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं कृति सृजन आधुनिक समाज में अपना अलग स्थान रखता है। साहित्य जगत में अलका जी का उपन्यास विशेष स्थान रखता है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक जागरूकता की बात की है। वर्तमान समकालीन समाज दिशाहीन होकर भटकाव की ओर बढ़ रहा है जिसे नियंत्रित करना आवश्यक है नहीं तो युवा वर्ग अपने भविष्य को संभाल नहीं पाएंगे। इस बदलते सामाजिक यथार्थ की दलित तलस्पर्शी व्याख्या प्रस्तुत की है। सामाजिक विसंगतियों के साथ संघर्ष उनकी रचनाओं में हमेशा विद्यमान रहता है। अलका जी के कथा साहित्य को विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। निश्चित ही अलका जी का कथा साहित्य साहित्य जगत में श्रेष्ठ स्थान रखता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ अशोक तिवारी, ''प्रतियोगिता साहित्य सीरीज (हिंदी)
2. डॉ नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास,
3. अलका सरावगी, (2001) कलिकथा वाया बाईपास, आधार प्रकाशन पंचकुला, हरियाणा
4. अलका सरावगी, (2008) ''एक ब्रेक के बाद'', राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली,
5. अलका सरावगी, (2004) ''कोई बात नहीं'', राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली,
6. डॉ नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास,